



NEERAJ®

M.H.D.- 14

हिन्दी उन्यास-१

(प्रेमचन्द का विशेष अध्ययन)

**Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers**

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Roma Rani



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 400/-

Published by:



NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the “Special Discount Schemes” being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay “Cash on Delivery” (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

हिन्दी उपन्यास-1

(प्रेमचन्द का विशेष अध्ययन)

Question Paper—June-2023 (Solved)	1-4
Question Paper—December-2022 (Solved).....	1-4
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved)	1-3
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved)	1-6
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved)	1-5
Question Paper—December, 2019 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-4
Question Paper—December, 2017 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-7

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
1.	प्रेमचन्द का व्यक्तित्व एवं जीवन दृष्टि	1
2.	प्रेमचन्द का साहित्य	13
3.	प्रेमचन्द की साहित्यिक मान्यताएँ	30
4.	प्रेमचन्द के उपन्यास और हिन्दी आलोचना	47
5.	‘सेवासदन’ : अन्तर्वर्स्तु का विश्लेषण	63
6.	सेवासदन : शिल्प संरचना (औपन्यासिक शिल्प)	75
7.	सेवासदन की नायिका (सुमन)	83
8.	प्रेमाश्रम और कृषि-समस्या	94
9.	प्रेमाश्रमयुगीन भारतीय समाज और प्रेमचन्द का आदर्शवाद	106

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
10.	‘प्रेमाश्रम’ का औपन्यासिक शिल्प	114
11.	ज्ञानशंकर का चरित्र	132
12.	‘रंगभूमि’ और औद्योगीकरण की समस्या	143
13.	‘रंगभूमि’ पर स्वाधीनता आंदोलन और गाँधीवाद का प्रभाव	156
14.	‘रंगभूमि’ का औपन्यासिक शिल्प	156
15.	सूरदास का चरित्र	178
16.	‘गबन’ और राष्ट्रीय आंदोलन	190
17.	‘गबन’ और मध्यवर्गीय समाज	199
18.	‘गबन’ का औपन्यासिक शिल्प	214

■ ■

**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

हिन्दी उपन्यास–1 (प्रेमचन्द का विशेष अध्ययन)

M.H.D.-14

समय : 2 घण्टे /

/ अधिकतम अंक : 50

नोट : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

(क) जब जाह्वी के स्नेह व्यवहार से वह प्रसन्न होते, तो उन्हें सुमन की कथा कहने की बड़ी तीव्र आकंक्षा होती। हृदय सागर में तरंगें उठने लगतीं, लेकिन परिणाम को सोचकर रुक जाते थे। आज कृष्णचंद की कृतञ्जता और जाह्वी की स्नेहपूर्ण बातों ने उमानाथ को निःशंक कर दिया, पेट में बात रुक न सकी। जैसे किसी नाली में रुकी हुई बस्तु भीतर से पानी का बहाव पाकर बाहर निकल पड़े, उन्होंने जाह्वी से सारी कथा बयान कर दी।

उत्तर—संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचन्द के उपन्यास ‘सेवासदन’ से उद्धृत है। सुमन के मामा उमानाथ अपनी पत्नी जाह्वी के प्रसन्न होने पर उसे सुमन के जीवन की व्यथा बताने की इच्छा उनके मन में होती, किंतु जाह्वी की गंगाजली और सुमन के प्रति कटुता से परिणाम को सोचकर चुप हो जाते थे। किंतु कृष्णचंद की कृतञ्जता और जाह्वी के स्नेहपूर्ण व्यवहार से वे रुक नहीं पाए और उसे सब बताने लगे। इसी का वर्णन इस परिक्रयों में है—

व्याख्या—उमानाथ सुमन के मामा थे। वे सुमन से स्नेह करते थे और उसके जीवन में आए दुखों के बारे में अपनी पत्नी जाह्वी को बताना चाहते थे, किंतु सुमन और उसकी माँ के बारे में जाह्वी के विचार और दुर्व्यवहार को सोचकर चुप हो जाते थे। हालांकि जाह्वी के प्रसन्न होने पर उनकी इच्छा उसे सब बताने की होती थी। सुमन के पिता कृष्णचंद ने उमानाथ के साथ विश्वासघात किया। दूसरी ओर जाह्वी के स्नेहपूर्ण व्यवहार से वे पिघल गए और अपने मन की बातें जाह्वी को इस भाव से बताने लगे, जिस प्रकार नाली में अटकी चीजें तेज बहाव से बह जाती हैं।

विशेष—1. भाषा, सहज, प्रवाहमयी एवं भावानुकूल है।

2. मनोस्थिति के अनुसार व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन को दिखाने का प्रयास है।

(ख) कुआर की धूप थी, देह से चिनगारियाँ निकलती थीं, पसीने की धारे बहती थीं; किन्तु वह सिर तक न उठाता था। बलराज कभी खेत में आता, कभी पेड़ के नीचे जा बैठता, कभी चिलम पीता। एक ही अग्नि दोनों के हृदय में प्रज्ञवलित थी, एक ओर सुलगती हुई, दूसरी ओर दहकती हुई।

उत्तर—संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचन्द रचित उपन्यास ‘प्रेमाश्रम’ से लिया गया है। इस उपन्यास का मूल विषय जमीदारी व्यवस्था और उसके कारण कृषक वर्ग को होने वाली परेशानी को उजागर करना है। जमीदार के अत्याचार से सारे गाँव के साथ मनोहर और उसका भाई बलराज भी पीड़ित हैं, दोनों के मन में उसके प्रति आक्रोश भरा है। लेकिन जहाँ बलराज का मन इन सब बातों को लेकर बेचैन है, वहाँ मनोहर धैर्य के साथ मन को शांत रखकर अपने काम में लगा है, दोनों की विश्वासघात के इसी अंतर को दिखाते हुए लेखक ने मनोहर और बलराज की मनोदशा का वर्णन किया है—

व्याख्या—कुआर (आश्विन) का महीना चल रहा था और बहुत तेज धूप थी, मनोहर का सारा शरीर धूप की गरमी से जल रहा था और पसीना बह रहा था, लेकिन उसे काम के अलावा किसी और बात से सरोकार नहीं था। इधर बलराज बेचैन होकर खेत में इधर से उधर धूम रहा था, कभी पेड़ के नीचे बैठ जाता तो कभी चिलम पीने लगता। हालांकि दोनों के मन में एक ही प्रकार का आक्रोश था, किंतु दोनों ने उसे अपनी-अपनी तरह व्यक्त कर रहे थे। मनोहर शांति के साथ अपने कार्य में लगकर, तो बलराज बेचैन होकर। एक के मन आग सुलग रही थी, तो दूसरे के मन में दहक रही थी। एक का मन वायु के वेग की तरह चंचल हो रहा था, तो दूसरे का मन मंथर वायु की तरह निश्चल। दोनों अपने-अपने तरीके से अपने मन के आक्रोश को सम्हाले हुए थे।

विशेष—1. मन में विद्रोह की इच्छा हो, किंतु कुछ न कर पाने की विवशता का वर्णन है।

2 / NEERAJ : हिन्दी उपन्यास-1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन) (JUNE-2023)

2. मानव स्वभाव का चित्रण है कि एक ही स्थिति में सभी लोग अलग-अलग तरह से भाव व्यक्त करते हैं।

3. भाषा चित्रात्मक, ओजपूर्ण और भावप्रवण है।

4. विवेचनात्मक एवं मनोविश्लेषक शैली है।

(ग) सत्य मुझे देश और जाति, दोनों से प्रिय है। जब तक मैं समझता था कि प्रजा सत्य-पक्ष पर है, मैं उसकी रक्षा करता था। जब मुझे विदित हुआ कि उसने सत्य से मुँह मोड़ लिया, मैंने भी उससे मुँह मोड़ लिया। मुझे रियासत के अधिकारियों से कोई आंतरिक विरोध नहीं है। मैं वह आदमी नहीं हूँ कि हुक्काम के न्याय पर देखकर भी अनायास उनसे बैर करूँ और न मुझसे यही हो सकता है कि प्रजा को विद्रोह और दुराग्रह पर तत्पर देखकर भी उसकी हिमायत करूँ।

उत्तर-संदर्भ-प्रस्तुत पंक्तियां उपन्यास-सप्ताह प्रेमचंद की महत्वपूर्ण कृति 'रंगभूमि' में से उद्धृत की गई है। इस उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1925 है। इस उपन्यास पर गांधीजी के असहयोग आंदोलन का मुख्य प्रभाव है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास की रचना इस उद्देश्य से की थी कि आने वाले समय में भारत की जनता स्वाधीनता आंदोलन में भाग ले। असहयोग आंदोलन के बाद भारत में जिस आशावाद का संचार हुआ था, उसी आशावाद का रंग प्रेमचंद की 'रंगभूमि' में उजागर हुआ है। सूरदास मि. जानसेवक के सिंगरेट के कारखाने के विरोध में अपनी पैतृक जमीन उस कारखाने के लिए किसी भी कीमत पर नहीं देना चाहता है। उसकी इसी पूँजीपतिवर्ग के प्रति विरोधी भावना को इस उपन्यास 'रंगभूमि' के माध्यम से प्रेमचंद ने उजागर किया है।

व्याख्या-'रंगभूमि' उपन्यास में प्रेमचंद ने औद्योगिकीकरण की समस्या को केन्द्र-बिंदु बनाया है। उपन्यास में अंधे भिखारी सूरदास तथा उद्योगपति मि. जानसेवक का संघर्ष धीरे-धीरे आम जनता और सरकार के संघर्ष में परिवर्तित हो जाता है। सूरदास अपनी पैतृक जमीन कारखाने के निर्माण हेतु देने को तैयार नहीं होता जबकि पांडेपुर की बस्ती के लोग जमीन का मुआवजा मिलने के लालच में जमीन मि. जानसेवक के नाम कर देते हैं। पांडेपुर के निवासी तथा सूरदास के मध्य आरोप-प्रत्यारोपों का सिलसिला प्रारंभ हो जाता है। जिसमें सूरदास अपने को निर्दोष बताते हुए सत्य का साथ देने का हवाला देते, हुए बस्ती के लोगों के विरुद्ध हो जाता है। सूरदास एक और जहां पहले बस्ती के लोगों पर भलाई के लिए जान न्यौछावर करने को तैयार रहता था, वहाँ अब वह उन लोगों का साथ देने को तैयार नहीं है। उसका कहना है कि वह अधिकारियों से कोई बैर नहीं रखता, लेकिन अपने लोगों के विद्रोह तथा उनके बुरे विचारों का साथ देने वाले अधिकारियों तथा जनता का सहयोग अब वह सहन नहीं कर सकता है। अर्थात् सूरदास अपने पथ को सत्य का मार्ग मानते हुए, बस्ती के लोगों तथा सरकारी अधिकारियों का साथ देने के लिए तैयार नहीं होता।

विशेष-1. सत्य का साथ न देने के कारण प्रजा तथा अधिकारी वर्ग का विरोध दर्शाया गया है।

2. भाषा पात्रानुकूल तथा उर्दू मिश्रित है।

3. पूँजीपति वर्ग के विरुद्ध लेखक ने 'सूरदास' को अपना प्रतिनिधित्व प्रदान किया है।

(घ) जालपा रुधे हुए स्वर में बोली-कारण यही है कि अमाजी इसे खुशी से नहीं दे रही हैं, बहुत संभव है कि इसे भेजते समय वह रोई भी हों और इसमें तो कोई संदेह ही नहीं कि इसे वापस पाकर उन्हें सच्चा आनंद होगा। देने वाले का हृदय देखना चाहिए। प्रेम से यदि वह मुझे एक छल्ला भी दे दें, तो मैं दोनों हाथों से ले लूँ। जब दिल पर जब्र करके दुनिया की लाज से या किसी के धिक्कारने से दिया, तो क्या दिया। दान भिखारियों को दिया जाता है। मैं किसी का दान न लूँगी, चाहे वह माता ही क्यों न हो।

उत्तर-संदर्भ-प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद के उपन्यास 'गबन' से उद्धृत है। जालपा को विवाह के समय चंद्रहार की इच्छा थी, किंतु उसकी माँ ने उसे नहीं देती, किंतु बाद में उसके पास भेजती है। जालपा उसे लेने से इंकार करती है, रमा उसे हार लेने के लिए समझाने का प्रयास करती है। इसी संदर्भ में जालपा अपने मन के भावों को व्यक्त करती है।

व्याख्या-रमा द्वारा हार लेने के लिए समझाने पर जालपा भावुक होकर करती है कि यह हार उसकी माँ अपनी खुशी से नहीं दे रही है। इस हार के प्रति प्रेम होने के कारण वे इसे भेजते समय शायद रोई भी थी। अब मैं इसे स्वीकार न कर वापस भेज दूँ, तो वे इसे फिर से पाकर खुश हो जाए। किसी भी उपहार को लेने समय देने वालों के हृदय का भाव महत्वपूर्ण है। यह हार वह प्रेम से नहीं दे रही, यदि प्रेम से वे मुझे एक छल्ला भी लूँगी, तो मैं खुशी-खुशी स्वीकार कर लूँगी। यदि वे किसी जबरदस्ती अथवा समाज की लोक-लाज से बेमन से चीज दे रही हैं, तो उसका कोई लाभ नहीं। इस प्रकार दी गई वस्तु, उपहार न होकर भीख लगती है और मैं दान या भीख को स्वीकार नहीं करूँगी, चाहे वह मेरी माँ ही क्यों न दें।

विशेष-1. जालपा के स्वाभिमान एवं भावुकता को दिखाया गया है।

2. यह सत्य है कि प्रेम न होने अथवा अनिच्छा से दी गई वस्तु उपहार न होकर दान होता है।

3. स्वाभिमानी एवं भावुक व्यक्ति के लिए इच्छित कीमती वस्तु नहीं, अपितु भाव महत्व रखता है।

4. भाषा संबादात्मक एवं भावपूर्ण है।

प्रश्न 2. प्रेमचंद के कहानी संबंधी विचारों को विश्लेषित कीजिए।

पैर्पुल बिल्डिंग्स अध्याय-3, पृष्ठ-44, प्रश्न 6

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

हिन्दी उपन्यास-1

(प्रेमचन्द का विशेष अध्ययन)

प्रेमचन्द का व्यक्तित्व एवं जीवन दृष्टि

1

प्रेमचन्द का जीवन/व्यक्तित्व

प्रेमचन्द बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनका व्यक्तित्व सादगी से परिपूर्ण किन्तु असाधारण था। उनका जन्म 31 जुलाई, 1881 को, काशीकेनिकट 'लमही' नामक गांव में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। यह वह समय था जब भारत परत्रंता की बेंडियाँ में जकड़ा हुआ था किन्तु स्वतंत्रता की चाह भी अब भारतीय दिलों में हिलोरं लेने लगी थी, क्योंकि प्रेमचन्द के जन्म के कुछ ही समय पश्चात् 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। प्रेमचन्द केबचपनकाबोलतानाम 'नवाब' एवं 'स्कूलीनाम' 'धनपतराय' था। इनके पिता का नाम अजायब लाल एवं माता का नाम आनन्दी देवी था।

प्रेमचन्द का जीवन, एक औपनिवेशिक शासन में जीवित आम भारतीय आदमी के ही समान था। उनकी वेश-भूषा, खान-पान आदिसभी कुछ एक साधारण जैसाथा। उनके पुत्र अमृतराय ने उनके इस सादगीपूर्ण व्यक्तित्व को अपने इन शब्दों द्वारा अभिव्यक्त किया है—

“प्रेमचन्दकीसरलतासहजहै। उसमें कुछ तोड़सदेशकी पुरानी मिट्टी का संस्कार है, कुछ उसका नैसर्गिक शील है, संकोच है, कुछ उसकी गहरी जीवन-दृष्टि है और कुछ उसका सच्चा आत्म-गौरव है, जो किसी तरह के आत्म-प्रदर्शन या विज्ञापन को उसके नजदीक घटियाबनादेता है।”

उनके व्यक्तित्व की यह सादगी उनके द्वारा रचित साहित्य में सर्वत्र छिटकी पड़ी है। उनके इस सादगीपूर्ण एवं असाधारण व्यक्तित्व का निर्माण जिस परिवेश में हुआ, उसको जाने बिना उनके व्यक्तित्व की इस चमक को समझ पाना कठिन होगा।

प्रेमचन्द का जन्म एक खाते-पीते साधारण मध्यमवर्गीय कृषक परिवार में हुआ, किन्तु उनके पिता कृषि से जीविकापोर्जन करने में असमर्थ रहे, फलतः वे पोस्ट मास्टर हो गए। प्रेमचन्द के जन्म के समय वे इस नौकरी द्वारा 20 रु. महावार पाते थे और गांव वालों की चिट्ठियाँ आदि लिख देने के बदले, उन्हें अनाज, दूध, सब्जियाँ आदि भी भेंट स्वरूप मिल जाया करते थे। कुल मिलाकर अजायब लाल की आरम्भिक स्थिति अच्छी थी। प्रेमचन्द के जीवन के दुःखद पक्ष का आरम्भ उस समय होता है, जब उनकी माता आनन्दी देवी का देहान्त (1889) हो जाता है, तब वे मात्र सात वर्ष के थे। यह दुःख तब और भी कष्टकारक हो जाता है, जब उनके पिता अजायब लाल ने दूसरा विवाह कर लिया। स्वयं धनपतराय के शब्दों में—

“मेरे पिता जीवन-पथ पर बहुत संभल कर चले, पर अंतिम दिनों में लड़ खड़ा गए।”

जैसा कि अक्सर एक विमाता के आने पर होता है, प्रेमचन्द को भी विमाता की उपेक्षा का शिकार होना पड़ा। उन्होंने अपने इस दुःख का साथी उर्दू साहित्य को बना लिया, तब वे गोरखपुर के मिशन स्कूल में तीसरी कक्षा के विद्यार्थी थे। इस छोटी-सी उम्र में उन्होंने तमाम उर्दू लेखकों, यथा—पं रत्ननाथ सरशार, मौलवी मुहम्मद अली, मौलाना शाह आदि द्वारा रचित साहित्य को पढ़ा। इसके साथ ही नाल्ड के उपन्यासों के अनुवाद, ‘तिलिस्महोशरुबा’ आदि के कई खण्डों को भी पढ़ा। इस तरह प्रेमचन्द ने अपने जीवन की कड़वाहट को कम करने का प्रयास किया। इस काल का एक सुखद पहलू भी था और वह यह था कि इस अध्ययन ने उनके लेखन की नींव रखी।

2 / NEERAJ : हिन्दी उपन्यास-1 (प्रेमचन्द का विशेष अध्ययन)

जहाँ प्रेमचन्द के पिता द्वारा दूसरा विवाह किया जाना उनकी एक बड़ी भूल थी, वहाँ इससे भी बड़ी भूल थी अपनी नयी पत्नी के कहने पर मात्र 15 वर्ष की उम्र में प्रेमचन्द का विवाह कर देना। अपने इस विवाह से प्रेमचन्द संतुष्ट न थे, क्योंकि उनकी पत्नी कुरुप होने के साथ-ही-साथ कर्कश व्यवहार की भी थी जो कि उनके चित्तानुकूल न था। फलतः उनका यह विवाह असफल रहा। उनके विवाह के कुछ समय पश्चात् 1897, में पिता अजायब लाल का देहान्त हो गया, लड़कपन की उम्र में उन्हें घर चलाने की चिन्ता करनी पड़ी। तब वे बनारस के क्वीन्स कॉलेज में नवीं कक्षा के छात्र थे और उनके परिवार में दो सौतेले भाई, सौतेली माँ एवं स्वयं की पत्नी थी। इस विकट स्थिति में काशी में ट्यूशन पढ़ा कर अपना गुजारा करने लगे, साथ ही अपनी पढ़ाई को भी जारी रखा। कमी पड़ जाने पर उधार भी लिया जाता था। किसी तरह से उन्होंने नवीं कक्षा पास की एवं फीस माफ कराकर 1898 में मैट्रिक की परीक्षा भी द्वितीय श्रेणी में पास की। चूंकि मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की थी, इसलिए इन्टर कॉलेज की फीस माफ नहीं हो सकी। अतः क्वीन्स कॉलेज में उनका दाखिला नहीं हो सका। आय का कोई साधन नहीं होने के कारण प्रेमचन्द को पुनः ट्यूशन एवं उधार का सहारा लेना पड़ा। उनके एक सहपाठी ने पाँच रुपए महावार पर एक बकील के बच्चे को पढ़ाने का काम दिलवा दिया था। उन पाँच रुपयों में से वे तीन रुपए परिवार को भेजते थे और दो अपनी गुजर-बसर के लिए रखते थे। दो रुपये में अपनी गुजर-बसर कठिन थी। इसलिए कई बार उन्हें फगके भी करने पड़ते थे। एक बार दो दिन तक भूखा रहने के पश्चात् वे अपनी गणित की दो रुपये की एक पुस्तक आधी कीमत में बेचने के लिए एक पुस्तक विक्रेता के पास गए वहाँ उनकी एक अनजान व्यक्ति से भेट हुई। वह अनजान व्यक्ति प्रेमचन्द की दयनीय अवस्था को देख अत्यन्त द्रवित हुआ और उसने प्रेमचन्द से पूछा,

मैट्रिकुलेशन पास हो?

‘जी हाँ।’

‘नौकरी करने की इच्छा तो नहीं है।’ प्रश्न हुआ।

“नौकरी कहीं मिलती नहीं” प्रेमचन्द ने उत्तर दिया।

यह अजनबी चुनारगढ़ के मिशनरी स्कूल का हेडमास्टर था। उसे अपने विद्यालय में शिक्षक की आवश्यकता थी, जो कि उसे प्रेमचन्द के रूप में प्राप्त हुआ। प्रेमचन्द से उन्होंने कहा कि वह 18 रुपए मासिक की उन्हें नौकरी दे सकता है। इस प्रकार 1898 में ही प्रेमचन्द को चुनारगढ़ के मिशनरी स्कूल में अध्यापक की नौकरी प्राप्त हो गई। अब वे चुनारगढ़ में ही रहते और छुट्टियों में ही घर आते। हालांकि उनका बेतन समयानुसार संतोषजनक था, किन्तु इसी में ही परिवार का खर्च और अपना गुजर करना कठिन था, इसलिए ट्यूशन पढ़ाने एवं उधार लेने का क्रम जारी रहा। किन्तु, उनकी यह

नौकरी ज्यादा दिनों तक टिकी नहीं रही। इस नौकरी के छूटने का कारण एक फुटबॉल मैच था, जो उनके स्कूल की टीम और मिलिटरी के अंग्रेजों की टीम के बीच था, इसमें उन्होंने अपने छात्रों के साथ मिलकर अंग्रेजों की पिटाई कर दी थी। अतः अपने स्वाभिमानी व्यक्तित्व के चलते इस घटना के साल भर के भीतर ही उन्होंने यह नौकरी छोड़ दी। लेकिन जल्द ही उन्हें बहराइच में एक सरकारी विद्यालय में नौकरी मिल गई। बहराइच से उनका तबादला प्रतापगढ़ को हुआ। इस क्रम में उनकी आर्थिक तंगहाली की स्थिति ज्याँ-की-त्याँ बनी रही। इस तंगहाली के बावजूद भी जिन्दगी कुछ संतोषजनक रही और पढ़ने के साथ-साथ लिखने का क्रम भी जारी हो गया।

1902 के आसपास, जब संपूर्ण उत्तर भारत में सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन का जोर था, जब बाल गंगाधर तिलक, विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती आदि अपने-अपने ढंग से इसमें योगदान दे रहे थे तभी प्रेमचन्द पर दयानन्द सरस्वती के ‘आर्य समाज’ का विशेष प्रभाव पड़ा, क्योंकि आर्य समाज के विचार बाल विवाह, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, जाति प्रथा आदि विषय पुनर्जागरण के अनुकूल थे। अतः प्रेमचन्द आर्य समाज की सभाओं में जाने के साथ-साथ इसके सदस्य भी बन गए। इसी बीच इनको 1902 में इलाहाबाद के मॉडल ट्रेनिंग स्कूल में उच्चतर प्रशिक्षक के लिए चुन लिया गया। 1904 में, प्रशिक्षक की परीक्षा पास करके पढ़ाने की उपाधि पाई और साथ ही उर्दू-हिन्दी में ऑरियंटल इलाहाबाद विश्वविद्यालय का विशेष वनर्क्युलर इन्टिहान भी पास किया।

अध्यापक के रूप में प्रेमचन्द का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरण होता रहा। इसके साथ-ही-साथ उनका लिखने का क्रमभी जारीरहा। छोटी-मोटी प्रतिक्रियाओं में उनकी रचनाएँ नवाब राय'

केनामसेप्रकाशितहोचुकीथीयहनामउनकेबचपनका घर का नाम था। इसी बीच स्थानान्तरण के क्रम में उनका स्थानान्तरण 1905 ई० में कानपुर में हो गया। यहाँ आकर लिखना उनके जीवन का उद्देश्य एवं नियम बन गया। भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण से संबंधित आनंदोलनों ने उनके सामने लिखने के लिए विषयों की बाढ़ लगा दी थी। 1905 से कुछ समयपूर्वीकानपुरसे‘जमाना नामक पत्रिकाकीशुरुआतहुई थी। इसपत्रिकाकोसम्पादकदयानारायण निगम थे। कानपुर एवं नियम बन गए। कानपुर पहुंचने के पश्चात् वे ‘जमाना’ के कर्मचारियों का ही एक हिस्सा बन गए। ‘जमाना’ में भी उन्होंने‘नवाबराय’ केनामसेकहानियाँ, साहित्यिक टिप्पणियाँ आदि के लेखन का कार्य आरम्भ किया। यहाँ से 1906 में उनका पहला संपूर्ण उपन्यास ‘हमखुर्मा-ओ हमसवाब प्रकाशित हुआ।

प्रेमचन्द का व्यक्तित्व एवं जीवन दृष्टि / 3

अगलहीवर्षइसकाहिन्दीअनुवाद‘प्रे मा केनामसहुआ।

अनुवाद प्रेमचन्द ने संभवतः स्वयं ही किया।

प्रेमचन्द स्वभाव से बहुत ही खुशमिजाज एवं जिन्दादिल इन्सान थे। जोर से ठहाके लगाकर हँसना उनके व्यक्तित्व की एक विशिष्टताथीप्रेमचन्दकोजाननेवालेगांकेकथनानुसार- ‘वैसा ठहाका शायद ही कोई लगा पाता था। जब वे उन्मुक्त भाव से हँसते थे, तो कमरे के मकड़ों के जाले तक काँप उठते और बाजार में चलतेलोगइधर-उधरताकनेलगतो’’**कानपुर** काउनकाजीवन जितनाहीसहज एवं सुखदथा’’लमही आनेपरउनकाजीवन उतनाहीकठिन एवं खादहोजाताथा-उनकेपुत्रअमृतरायके शब्दोंमेही—“कानपुरकीजिन्दगीअगरस्वर्गथी, तोधरकीवह जिन्दगीनरक....।” विवाहितहोकरभीवेदाम्पत्यसुखसेवन्वित थे। लगभग 25 वर्ष तक यह स्थिति चलती रही। अन्ततः 1906 में उन्होंनेबालविधवाशिवरानी देवीसेविवाहकरलियाऔर इसके साथ ही उनके जीवन में एक नये अध्याय की शुरुआत हुई। यह विवाह उनके लिए सुखद रहा। लेखन कार्य में गति आ गई, प्रेमचन्द की लेखनी ने देश की बन्दी, किन्तु अपराजेय आत्मा को बाणी दी। वे 1905 से 1909 तक कानपुर में ही रहे और यह वह समय था, जब देश में स्वदेशी आन्दोलन की लहर थी। ‘गरम दल’ एवं बाल गंगाधर तिलक का चारों ओर शारे था। प्रेमचन्द वैचारिक दृष्टिकोण से तिलक के समर्थक थे।

इसके बाद 1909 में इनका स्थानान्तरण हमीरपुर हो गया, जहाँ ये विद्यालयों के सब-डिप्टी इंस्पेक्टर नियुक्त हुए। हमीरपुर ही वह स्थान था जहाँ वे नवाबराय से प्रेमचन्द हो गए। घटना कुछ इस प्रकारहुई—हमीरपुरआनेसेपूर्वहीउनका’ सो जे बतन’ 1908में प्रकाशित हो चुका था, जिसमें देशप्रेम से संबंधित कहानियाँ थीं और उन दिनों देशप्रेम को देशद्रोह समझा जाता था। किसी तरह अंग्रेज सरकार को यह जानकारी प्राप्त हो गई कि ‘सोजे बतन’ के लेखकनवाबरायधनपतरायहीहैंपरिणामस्वरूप, किसीप्रकार नौकरी तो बच गई लेकिन सरकार ने उनकी लेखनी पर याबन्दी लगा दी। लेकिन ये वो लेखनी न थी जो किसी के रोके रुकती। एकतरफजहाँनवाबरायकाअन्तहुआवहीप्रेमचन्दकाजन्म हुआ।

हमीरपुर में ही वे ऐचिश का शिकार हुए जो उनकी जीवन लीला के अन्त पर ही समाप्त हुआ। 1914 में इनका स्थानान्तरण बस्ती कर दिया गया। लेकिन स्वास्थ्य में कुछ खास सुधार न हुआ, तब इन्होंने लखनऊ, काशी तथा इलाहाबाद में अपना इलाज करवाया। खराब स्वास्थ्य के कारण निरीक्षक के पद पर बने रहना प्रेमचन्द के लिए संभव न था। अतः अपने काम में परिवर्तन की माँग की जिसे स्वीकार कर सरकार ने इन्हें बस्ती हाई स्कूल में नियुक्त कर दिया। इसी क्रम में इतना सब होने पर भी इन्होंने 1916

में एफ.ए. की परीक्षा पास की। इन्हीं दिनों बस्ती में ही इनकी मुलाकाततहसीलदारमन्नन द्विवेदीसहुई, जिनकप्रेरणासेहन्होंने हिन्दी में लिखना शुरू किया। कानपुर के ‘प्रताप’ और इलाहाबाद की ‘सरस्वती’ में उनकी रचनाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होने लगीं।

बस्ती से इनका स्थानान्तरण गोरखपुर हुआ। यहाँ की आबाहवा इन्हें कुछ रास आई। यहाँ पर प्रेमचन्द प्रसिद्ध देशभक्त, समाजसेवी एवं साहित्यकारमहावीर प्रसाद पोद्दारसेमिलोऽइनकोपुस्तक ‘एजेन्सी’ नामक प्रकाशन संस्था, कलकत्ता में थी। इन्हीं के सहयोग से इनकापहलाहिन्दीकहानीसंग्रह ‘सप्तसरोज’ प्रकाशितहुआ।

तत्पर्यचात् इनकेडपन्यास ‘बाजारे हुस्न’ काहिन्दीरूपान्तरण ‘सेवासदन’ प्रकाशितहुआ। इसप्रकारमहावीर प्रसाद पोद्दारने उद्दू से हिन्दी लेखन में अग्रसर होने में इनकी सहायता की।

इसी क्रम में इन्होंने उपन्यास लेखन की ओर प्रेरित हो ‘गांशाए-आफियत’ कीरचनाकीजिसकहिन्दी रूपान्तरण ‘प्रे मा श्रम’ केनामसेप्रकाशितहुआ। इसलेखनकार्यकेक्रममें ही इन्होंने बी.ए. की परीक्षा भी पास की। इसी काल में इन्होंने हिन्दी कहानी लेखन की ओर भी ध्यान दिया। हिन्दी में लिखी हुई इनकीपहलीकहानीं सौ त ‘थीजिसकाप्रकाशन’ ‘सरस्वती’ पत्रिका में, दिसम्बर 1915 के अंक में हुआ। इसके साथ ही हिन्दी कहानी लेखन का जो क्रम शुरू हुआ वह आजीवन चलता रहा। इसका अर्थ यह कदाचित नहीं था कि उन्होंने उद्दू लेखन को छोड़ दिया। उद्दू से हिन्दी में और हिन्दी से उद्दू रूपान्तरण का कार्य साथ-साथ चलता रहा जिसके बहुत से उदाहरण हैं। ‘सेवासदन’ और ‘प्रेमाश्रम’ के हिन्दी रूपान्तरण के बाद उद्दू में प्रेमचन्द ने 1922 में ‘चौगाने हस्ती’ नाम से उपन्यास लिखना शुरू किया जो 1924 में पूरा हुआ। इसका हिन्दी रूपान्तरण 1925 में ‘रंगभूमि’ के नाम से प्रकाशित हुआ। ऐसा नहीं कि प्रेमचन्द ने सभी उपन्यास मूलतः उद्दू में लिखे, उन्होंने मूलतः हिन्दी में भी उपन्यास लेखन का कार्य किया। हिन्दी में मूल रूप से लिखित उनका प्रथम उपन्यास ‘कायाकल्प’ (1926) प्रकाशित हुआ। इसके बाद तो एक के बाद एक इनके हिन्दी उपन्यास आए, यथा—निर्मला (1927), प्रतिज्ञा (1929), गबन (1931), कर्मभूमि (1932), गोदान (1936), मंगलसूत्र उनका अधूरा उपन्यास है जो कि इनकी मृत्यु के पश्चात् 1948 में प्रकाशित हुआ।

उनके इस अद्भुत लेखन का क्रम तब शुरू हो सका जब उन्होंने 16 फरवरी, 1921 को अपने सरकारी पद से त्यागपत्र दे दिया। यह घटना गांधीजी के प्रभाव में आने का परिणाम था। वे 1920-21 में गांधीजी द्वारा चलाये गए असहयोग आन्दोलन से बेहद प्रभावित हुए थे। इस त्यागपत्र से उनके जीवन में एक बार फिर जीविकोपार्जन के प्रश्न के साथ संघर्ष की शुरूआत हुई। प्रेमचन्द

4 / NEERAJ : हिन्दी उपन्यास-1 (प्रेमचन्द का विशेष अध्ययन)

ने पोद्धारजी के गांव के घर में जाने का मन बना लिया और वे उनके साथ गांव चले गए। कपड़े बनाने का काम शुरू कर चखें बनाने की दुकान भी खोली। लेकिन यह कार्य-व्यापार उनके मनोनुकूल न था। फलतः प्रेमचन्द कानपुर के मारवाड़ी विद्यालय में प्रधानाध्यापक हो गए, लेकिन मैनेजर से अनबन के कारण इन्होंने इस्तीफा दे दिया। इसके बाद इन्होंने एक के बाद एक-दो-तीन नौकरी की और छोड़ी, तत्पश्चात् लमही में घर बनाने का काम शुरू किया। इसी बीच प्रेमचन्द तीन सतानाओं के पिता बने। जिनमें उनकी पहली संतान का जन्म श्रीष्ट तराय के रूप में 1916 में, दूसरी संतान का जन्म मनू के रूप में 1920 में हुआ। इसका जीवन-काल मात्र 11 महीने था, इनकी तीसरी संतान का जन्म अमृतराय के रूप में 1922 में हुआ, जबकि मारवाड़ी हाईस्कूल के प्रधानाध्यापक थे।

1922 में प्रेमचन्द लमही में अपने घर को बनाने का काम शुरू कर चुके थे। बहुत दिनों से वे अपनी प्रेस सलगाने का स्वप्न संजोये थे जो कि साकार रूप 20 जुलाई, 1923 को ले सका। प्रेमचन्द ने अपनी प्रेस कानाम 'सरस्वती' परे से 'रखा। इसका उद्घाटन छविनाथ मिश्र ने चक्रकांडुमाकर किया। लेकिन प्रेस लगाना उन्हें रास न आया। प्रेस से मुनाफे की बजाय तुकसान होने लगा। अपने एक पत्र में प्रेमचन्द ने प्रेस की बुरी हालत का जिक्र करते हुए लिखा—

"मेरी प्रेस की हालत अच्छी नहीं। सालभर हो गए, नफा और सूट तो दर कितार, कोई 600 रु. का बाधा नहीं।"

प्रेस के मैनेजर महताब
राय, जो किंतु उनके सौतेले भाई हैं, प्रेस का प्रबंधन ठीक से नहीं कर पाये। प्रेस के हिस्सेदार तगादा करने लगे थे, अब उनके सामने एक यही राह थी कि नौकरी करके इस कर्ज को निपटाया जाए। अपने इस विचार को कार्य रूप देने में उन्होंने जरा भी देरी न करते हुए अगस्त, 1924 को लखनऊ में गंगा पुस्तक माला के साहित्यिक सलाहकार का पद संभाला। इसी काल में उन्होंने चौगाने हस्ती (रंगभूमि) की रचना की जो कि 1925 में गंगा पुस्तक माला से ही प्रकाशित हुई, किन्तु कुछ समय पश्चात् उन्होंने यह नौकरी छोड़ दी। वो वर्ष बनारस में रहने के बाद उन्होंने लखनऊ से नवल किशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित 'माधुरी' नामक पत्रिका का संपादन भार संभाला। यहीं उनकी भेंट लेखक जैनेंद्र से भी हुई।

इधर प्रेस की हालत में कोई सुधार न देखकर उन्होंने अपने सौतेले भाई महताब राय से इसका प्रबंधन भार वापस लेकर प्रवासी लाल वर्मा को सौंप दिया। प्रवासी लाल जी के प्रबंधन में प्रेस की हालत में कुछ सुधार न जर आया। इन्हीं के काल में 10 मार्च 1930 को 'हंस' का पहला अंक 'सरस्वती प्रेस' से प्रकाशित हुआ। हालांकि प्रेमचन्द ने अपने प्रेस के हिस्सेदारों का कर्ज चुका दिया

जिससे प्रेस उनकी अपनी हो गई लेकिन 'हंस' के प्रकाशन से उनकी समस्याएँ हल नहीं हुईं। उधर दूसरी ओर 10 मार्च, 1931 को नवल किशोर प्रेस के मालिक बिशन नारायण भार्गव का देहान्त हो गया। प्रेमचन्द को उनकी इच्छा के विरुद्ध सम्पादकीय दायित्व से मुक्त कर पुस्तक विभाग भेज दिया गया, जहाँ उनका कार्य पाठ्य-पुस्तक समिति की स्वीकृति के लिए पुस्तकों निखाना था। लेकिन समिति के सदस्यों से उनकी निभ नहीं पाई और अन्ततः उन्हें नवल किशोर प्रेस को अलविदा कहना पड़ा। इधर प्रेस की स्थिति में कुछ खास सुधार न था। 'हंस' भी घाटे में चल रहा था। इन्हीं दिनों विनोद शंकर व्यास ने 'जागरण' नामक एक साप्ताहिक पत्र आरंभ किया था, लेकिन उसे मजबूरन उन्हें बन्द करना पड़ा। उन्होंने इस पत्र को प्रेमचन्द को सौंपने का प्रस्ताव रखा। प्रेमचन्द के मन में भी एक साप्ताहिक पत्र निकालने की योजना थी, अतः उन्होंने इसे यह जानते हुए भी स्वीकार कर लिया कि इससे कठिनाइयाँ बढ़ देंगी ही और उम्मीद के मुताबिक कठिनाइयाँ बढ़ भी गईं। उनकी इस समय की स्थिति का ज्ञान, उनके द्वारा बनारसी दास चतुर्वेदी को लिखे पत्र द्वारा होता है।

अब उन पर 'हंस' एवं 'जागरण' दो पत्रों को चलाने का दायित्व था, किन्तु पूँजी के अभाव ने समस्याएँ उत्पन्न कर दीं। कागजों के बिल एवं कर्मचारियों के बकाया बेतन ने इस संकट को और गहरा दिया। इस घोर संकट के समय में एक आशा की किरण तब नजर आई जब बम्बई के एक फिल्म निर्माता ने उनके उपन्यास 'सेवासदन' पर फिल्म बनाने का प्रस्ताव उनके पास भेजा। प्रेमचन्द ने मजबूरी में मात्र 750 रु. में फिल्म बनाने का अधिकार उन्हें सौंप दिया। कुछ समय पश्चात् बम्बई की एक फिल्म कम्पनी, 'अजन्ता सिनेटेन' ने उन्हें 700 रुपये महावार पर अपने यहाँ नियुक्त करना चाहा। 'हंस' एवं 'जागरण' पत्रों को चलाने के लिए प्रेमचन्द को यह प्रस्ताव आकर्षक लगा। इस तह प्रेमचन्द 1934 में बम्बई पहुंच गए, किन्तु यह कार्य भी इतना सहज न था, क्योंकि फिल्म समाइं को लेखन-गुणवत्ता से सरोकार न था, उन्हें तो नफे से सरोकार था। अतः यहाँ उपन्यास समाइं को मुम्बई के फिल्म समाइं से लोहा लेना पड़ा। फिल्म समाइं की धनलोत्पत्ता उपन्यास समाइं को रास न आई और दूसरी ओर इनके द्वारा लिखी पटकथा पर आधारित फिल्में भी असफल रहीं, जिसके परिणामस्वरूप कपंनी की आर्थिक स्थिति डांवांडोल हो गई और कपंनी लगभग बंद हो गई। अन्ततः उन्होंने फिल्म नगरी मुम्बई से विदा ले ली और वापस काशी आकर अपने सर्वप्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' को पूरा किया जिसकी शुरुआत उन्होंने मुम्बई में ही की थी। इस काल तक प्रेमचन्द की गिनती हिन्दी साहित्य के सर्वोपरि साहित्यिकारों में होने लगी। मुम्बई प्रवास के दौरान प्रेमचन्द ने इस बात को अच्छी तरह महसूस किया था कि विभिन्न भारतीय भाषाओं में एकता होनी चाहिए। उन्हें एक दूसरे के